

## वाराणसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० नीता सिंह  
शोध निर्देशिका  
असिस्टेण्ट प्रोफेसर  
राजा श्रीकृष्ण दत्त पी०जी० कालेज,  
जौनपुर (उ०प्र०)

रूपम सिंह  
शोधकर्त्री  
राजा श्रीकृष्ण दत्त पी०जी० कालेज,  
जौनपुर (उ०प्र०)सम्बद्ध  
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्वय  
विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)



**सारांश—**प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में वाराणसी मण्डल के अन्तर्गत जौनपुर, गाजीपुर एवं वाराणसी जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में कुल 6 महाविद्यालयों का चयन कर यादृच्छिक विधि से 400 छात्राओं जिनमें 200 कला वर्ग की एवं 200 विज्ञान वर्ग की छात्राओं को चयनित किया गया है। उपकरण के रूप में छात्राओं की आकांक्षा स्तर को मापने के लिए डॉ० सरिता आनन्द द्वारा निर्मित ‘कैरियर एस्प्रेशन स्केल’ का प्रयोग किया गया है। औँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी—अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये— ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की आकांक्षा स्तर शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा निम्न पायी गयी जिसका कारण ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों की कमी के कारण माता—पिता का कम पढ़ा—लिखा होने के साथ—साथ ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का माहौल कम होने के साथ—साथ छात्राओं को कम अभिप्रेरित किया जाना हो सकता है।

**की—वर्ड—** स्नातक स्तर, छात्राएँ, आकांक्षा स्तर, तुलना।

**भूमिका—** आधुनिक युग में मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास कर रहा है मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नवीन परिवर्तन आ रहे हैं जिसके कारण मनुष्य के जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन हुए और मनुष्य दुरुरहता से सरलता की ओर बढ़ा है। समाज के पूर्व प्रतिमान आज समाप्त हो गये हैं ओर उसके स्थान पर नये प्रतिमान स्थापित हुए हैं जो केवल मानव की आकांक्षा के कारण की सम्भव हो सका है। मानव अपनी आकांक्षा के परिप्रेक्ष्य में ही उन्नति करता है।

मनुष्य विभिन्न प्रकार के अनुभव तथा अनुभवों से समझदारी एवं ज्ञान—प्रति ही नहीं करता बल्कि उनका सोददेश्य संचय भी करता जाता है। ऐसी उपलब्धि मानव द्वारा उसकी शैक्षिक आकांक्षा से सम्भव है।

किसी मनुष्य की आकांक्षा पर मनुष्य की सामाजिक—आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है। मनुष्य परिवर्तित समाज के अनुरूप अपनी रूचियों, इच्छाओं, अभिक्षमताओं को परिवर्तित करता रहता है।

प्रत्येक समाज की अपनी परम्परा रीति—रिवाज तथा समाज के अपने सदस्यों से कुछ अपेक्षाएँ होती है। इन सभी का प्रभाव व्यक्ति की आकांक्षा पर पड़ता है। प्रत्येक सामाजिक—आर्थिक स्तर के छात्रों की अपनी विचारधारा के अनुसार शैक्षिक आकांक्षा होती है तथा इसी से अनुप्रेरित होकर वे अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति करने का प्रयास करते हैं और जीवन को आनन्दमय तथा सुखमय बनाते हैं।

मनुष्य की आकांक्षा विशाल है। आकांक्षा की पूर्ति हेतु मनुष्य अनेक कार्यों को सम्पादित करता है। व्यक्ति के कार्य करने की मात्रा और उसके कार्य को सोचने की मात्रा व्यक्ति के आकांक्षा स्तर के लक्ष्य को सही निर्धारित करती है। सामाजिक—आर्थिक स्थिति पर व्यक्ति के कार्य करने की मात्रा तथा उस कार्य को सोचने की मात्रा प्रभावित होती है। निम्न सामाजिक—आर्थिक स्थिति के व्यक्ति के कार्य की मात्रा तथा कार्य करने की क्षमता भिन्न हो सकती है क्योंकि उसके पास कार्य एवं आकांक्षा सम्पादित करने के लिए आवश्यक स्रोत नहीं होते हैं जबकि औसत सामाजिक—आर्थिक स्थिति के मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा औसत या ऊँच रहती है तथा आकांक्षा को प्राप्त करने हेतु उसके पास आवश्यकतानुसार संसाधन भी रहते हैं।

अतः अध्ययनकर्त्री ने अपने अध्ययन के माध्यम से ही यह देखने का प्रयास किया है कि क्या शहरी क्षेत्रों की छात्राओं में जो आकांक्षा स्तर होता है वही ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में होता है कि नहीं?

### समस्या कथन—

वाराणसी मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

### अध्ययन का उद्देश्य—

1. स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### अध्ययन की परिकल्पनाएँ—

H<sub>01</sub> स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**H<sub>02</sub>** स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### शोध—प्रविधि

अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में वाराणसी मण्डल के अन्तर्गत जौनपुर, गाजीपुर एवं वाराणसी जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में कुल 6 महाविद्यालयों का चयन कर यादृच्छिक विधि से 400 छात्राओं जिनमें 200 कला वर्ग की एवं 200 विज्ञान वर्ग की छात्राओं को चयनित किया गया है। उपकरण के रूप में छात्राओं की आकांक्षा स्तर को मापने के लिए डॉ० सरिता आनन्द द्वारा निर्मित “कैरियर एस्प्रेशन स्केल” का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी—अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

### ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या—

1. स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन—

**H<sub>01</sub>** स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### सारणी सं० 4.1

**स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात की तालिका**

आकांक्षा की विमा	संकाय	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी—मान
निष्ठा	शहरी क्षेत्र	100	18.96	3.50	0.77	0.45	1.71
	ग्रामीण क्षेत्र	100	18.19	2.86			
प्रेरणा	शहरी क्षेत्र	100	16.19	3.13	1.17	0.41	2.85*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	15.02	2.72			
बोध	शहरी क्षेत्र	100	22.39	3.93	1.42	0.51	2.78*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	20.97	3.21			

आत्म—विश्वास	शहरी क्षेत्र	100	18.33	3.37	0.58	0.45	1.29
	ग्रामीण क्षेत्र	100	17.75	2.94			
प्रबन्धन / तैयारी	शहरी क्षेत्र	100	19.32	3.37	0.54	0.44	1.23
	ग्रामीण क्षेत्र	100	18.78	2.77			
आकांक्षा स्तर	शहरी क्षेत्र	100	95.19	11.20	4.48	1.37	3.27*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	90.71	7.85			

\*0.05 पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी 1 में स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा का मध्यमान 18.96 एवं मानक विचलन 3.50 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा का मध्यमान 18.19 तथा मानक विचलन 2.86 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 1.71 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा का मध्यमान 16.19 एवं मानक विचलन 3.13 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा का मध्यमान 15.02 तथा मानक विचलन 2.72 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 2.85 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

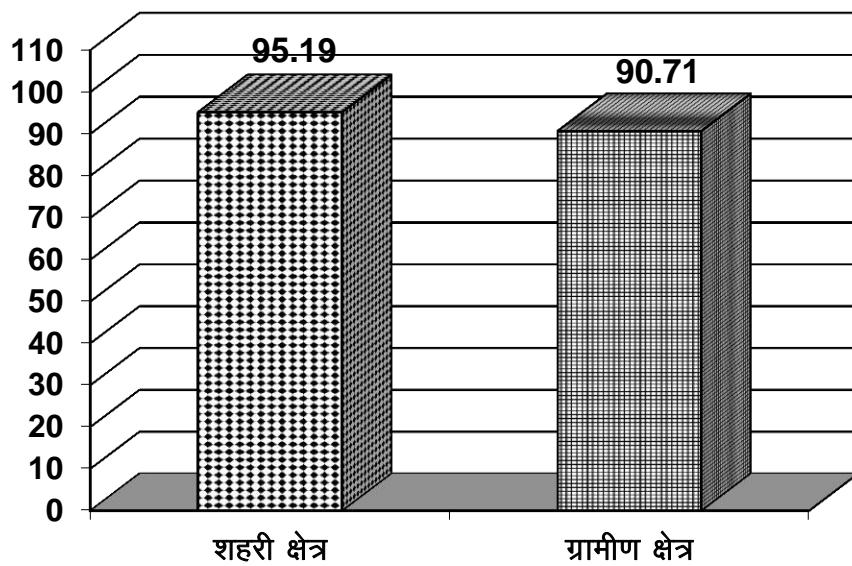
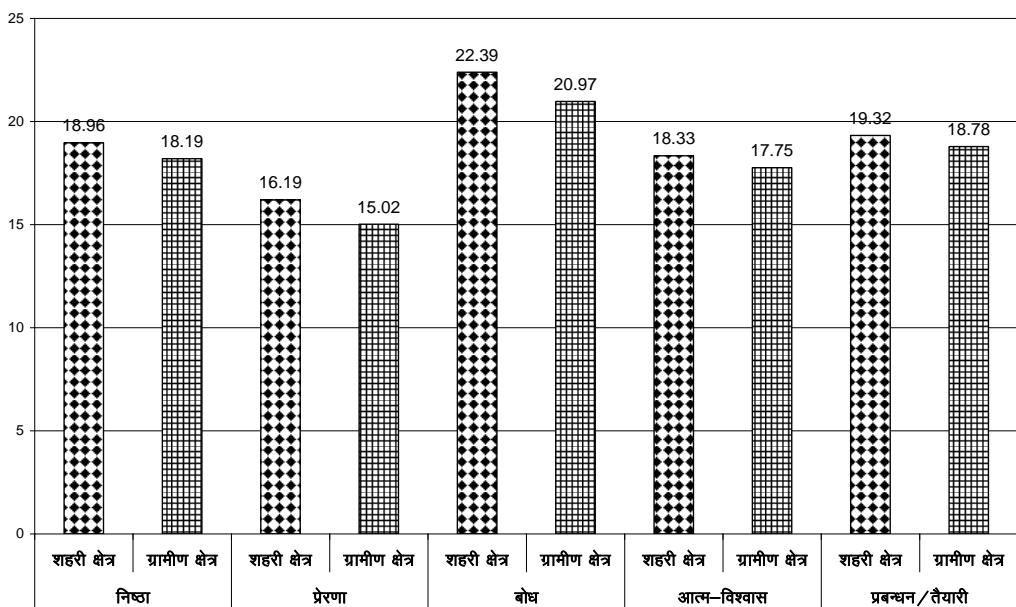
स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध का मध्यमान 22.39 एवं मानक विचलन 3.93 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध का

मध्यमान 20.97 तथा मानक विचलन 3.21 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 2.78 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध में सार्थक अन्तर है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास का मध्यमान 18.33 एवं मानक विचलन 3.37 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास का मध्यमान 17.75 तथा मानक विचलन 2.94 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 1.29 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी का मध्यमान 19.32 एवं मानक विचलन 3.37 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी का मध्यमान 18.78 तथा मानक विचलन 2.77 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 1.23 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान 95.19 एवं मानक विचलन 11.20 तथा ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान 90.71 तथा मानक विचलन 7.85 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 3.27 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।



2. स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन—

$H_{02}$  स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## सारणी सं0 2

**स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात की तालिका**

आकांक्षा की विमा	संकाय	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी—मान
निष्ठा	शहरी क्षेत्र	100	21.55	2.74	1.94	0.42	4.62*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	19.61	3.19			
प्रेरणा	शहरी क्षेत्र	100	16.88	2.50	0.62	0.37	1.68
	ग्रामीण क्षेत्र	100	16.26	2.74			
बोध	शहरी क्षेत्र	100	24.24	3.04	1.51	0.46	3.28*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	22.73	3.51			
आत्म—विश्वास	शहरी क्षेत्र	100	20.46	2.79	1.99	0.42	4.74*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	18.47	3.09			
प्रबन्धन / तैयारी	शहरी क्षेत्र	100	21.20	3.48	1.87	0.49	3.82*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	19.33	3.48			
आकांक्षा स्तर	शहरी क्षेत्र	100	104.33	9.27	7.93	1.30	6.10*
	ग्रामीण क्षेत्र	100	96.40	9.16			

\*0.05 पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी 2 में स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा का मध्यमान 21.55 एवं मानक विचलन 2.74 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा का मध्यमान 19.61 तथा मानक विचलन 3.19 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 4.62 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः

स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा में सार्थक अन्तर है।

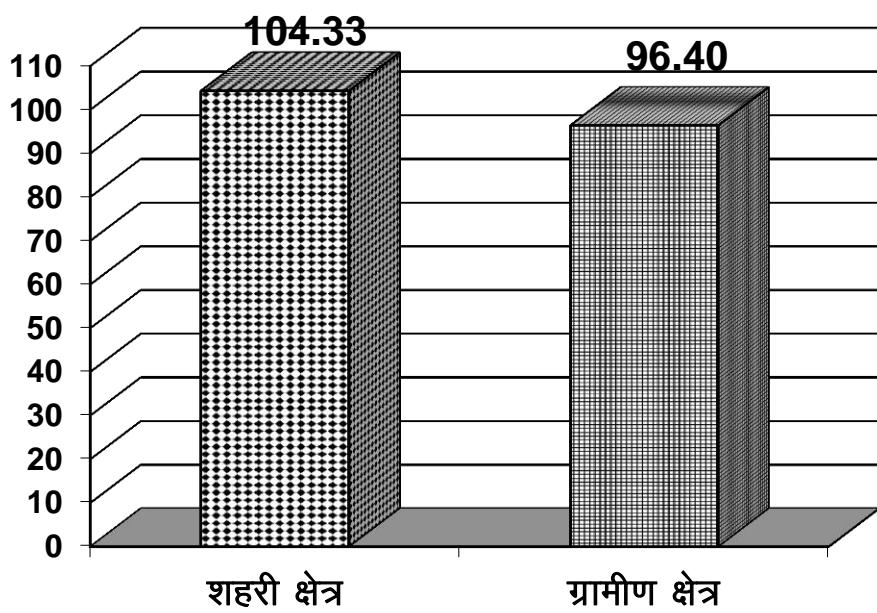
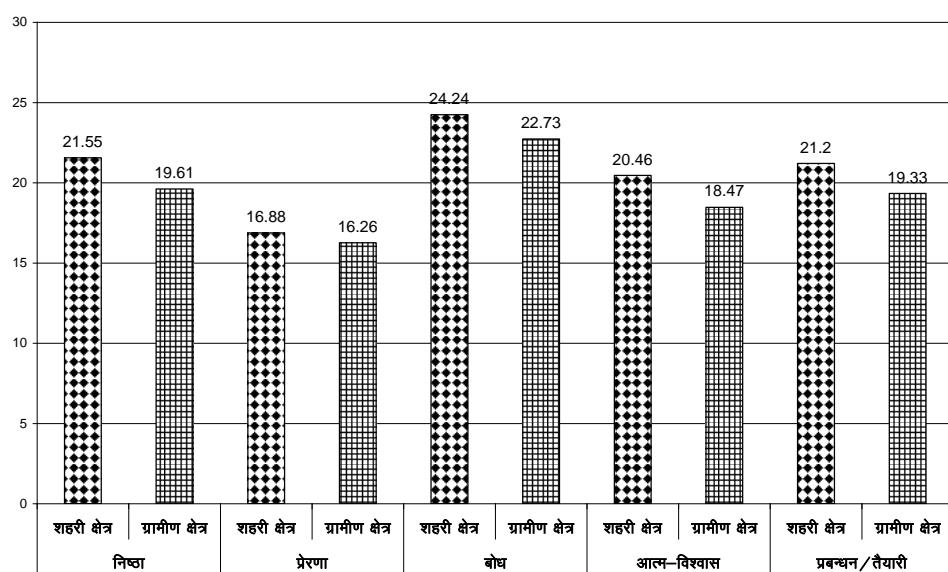
स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा का मध्यमान 16.88 एवं मानक विचलन 2.50 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा का मध्यमान 16.26 तथा मानक विचलन 2.74 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 1.68 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध का मध्यमान 24.24 एवं मानक विचलन 3.04 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध का मध्यमान 22.73 तथा मानक विचलन 3.51 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 3.28 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा बोध में सार्थक अन्तर है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास का मध्यमान 20.46 एवं मानक विचलन 2.73 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास का मध्यमान 18.47 तथा मानक विचलन 3.09 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 4.74 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा आत्म—विश्वास में सार्थक अन्तर है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी का मध्यमान 21.20 एवं मानक विचलन 3.48 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी का मध्यमान 19.33 तथा मानक विचलन 3.48 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 3.82 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रबन्धन/तैयारी में सार्थक अन्तर है।

स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान 104.33 एवं मानक विचलन 9.27 तथा ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान 96.40 तथा मानक विचलन 9.16 है। परिगणित टी—अनुपात का मान 6.10 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी—अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी—अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विज्ञान वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।



## निष्कर्ष—

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

- स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा, आत्म-विश्वास एवं प्रबन्धन/तैयारी एक-दूसरे में समानता है जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं में आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा, बोध एवं सम्पूर्ण आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।
- स्नातक स्तर के शहरी क्षेत्र की कला वर्ग छात्राओं के आकांक्षा स्तर की विमा प्रेरणा एक-दूसरे में समानता है जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं में आकांक्षा स्तर की विमा निष्ठा, बोध, आत्म-विश्वास, प्रबन्धन/तैयारी एवं सम्पूर्ण आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र की कला वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

**निष्कर्षतः** ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की आकांक्षा स्तर शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा निम्न पायी गयी जिसका कारण ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों की कमी के कारण माता-पिता का कम पढ़ा-लिखा होने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का माहौल कम होने के साथ-साथ छात्राओं को कम अभिप्रेरित किया जाना हो सकता है। पूर्व अध्ययन में **बेदी, (2005)** ने सामाजिक, आर्थिक स्तर, बुद्धि व लिंग-भेद से सम्बन्धित किशारों की आकांक्षा का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में, शहरी किशोरियों के बीच, आशाओं का कारक वैयक्तिक एवं सामाजिक आकांक्षाओं को प्रभावित करता है जबकि जागरूकता के कारक शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करता है व्यवसायगत आकांक्षाएँ व्यवसायगत जागरूकता के कारक द्वारा प्रभावित होती है जबकि प्रतिष्ठा का कारक किसी प्रकार की अभिरुचियों को प्रभावित नहीं करता जबकि ग्रामीण पुरुषों के बीच, प्रतिष्ठा का कारक वैयक्तिक एवं सामाजिक अभिरुचियों को प्रतिकूल ढंग से प्रभावित करता है जबकि सकारात्मक रूप से व्यवसायिक अभिरुचियों को प्रभावित करता है। आशाओं का कारक किसी प्रकार की अभिरुचियों को प्रभावित नहीं करता है। शैक्षिक जागरूकता का कारक शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करता है और व्यावसायिक जागरूकता व्यावसायिक आकांक्षाओं को।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्डेय, वन्दना (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के सन्दर्भ में आकांक्षा स्तर, व्यावसायिक रुचियों एवं शैक्षिक दुश्चिंता का अध्ययन, शोध—प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विविध), इलाहाबाद।
- बिष्ट, जी०एस० (1992). ए स्टडी ऑफ द लेवेल ऑफ द एजूकेशनल एम्पीरेशन्स इन रिलेशन टू सोशियो-इकोनामिक कन्डीशन एण्ड एजूकेशनल अटेन्सेन्ट, पी-एच.डी. एजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी, 1992।
- बेदी, एच०एच (2005). एस्पीरेशन्स ऑफ एडोलिसेन्ट्स एज रिलेटेड टू सोशियो-इकोनामिक स्टेट्स, इंटेलीजेन्स एण्ड सेक्स, पी-एच०डी० एजूकेशनल पंजाब यूनिवर्सिटी, 2005।
- शर्मा, अरविन्द (2002), उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की बुद्धिलब्धि, शैक्षिक रुचि, आकांक्षा स्तर, पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध: एक तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाशास्त्र में शोध, सी.एस. जे.एम.वि.वि., कानपुर।
- त्रिपाठी, अरुणा (2002). छात्राओं में शैक्षिक पिछड़ेपन के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, एवं पारिवारिक कारकों का शैक्षिक अध्ययन, पी-एच०डी० शोध, वी०एस०एस०डी० कालेज, कानपुर।